

# डॉ. क्रेग कीनर, रोमन्स, व्याख्यान 9, रोमियों 8:5-26

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 8:5-26 पर सत्र संख्या 9 है।

हमने, पिछले सत्र में, रोमियों 7 के बारे में बात की थी और कैसे रोमियों 7 कानून के तहत जीवन को दर्शाता है।

कभी-कभी ईसाई कहते हैं, लड़के, यह निश्चित रूप से मेरे जैसा लगता है। लेकिन जब यह हमारे जैसा लगता है, तो आम तौर पर ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हम केवल यह स्वीकार करने के बजाय कि ईश्वर ने हमारे लिए मसीह में क्या किया है, हम स्वयं धार्मिकता प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं, जो कि रोमन हमें बता रहे हैं कि हमें मसीह में किए गए कार्यों को स्वीकार करना चाहिए। . पॉल तकनीकी रूप से कानून के तहत जीवन को विश्वासियों के लिए नहीं बल्कि विश्वास के बिना, आत्मा के बिना कानून के तहत जीवन को संबोधित कर रहा है।

और इसलिए, इसका मतलब आस्तिक का जीवन नहीं है। और यदि हम इसका अनुभव कर रहे हैं, तो इसका कारण यह है कि हम भूल रहे हैं कि हमारे पास मसीह में क्या है। तो अब हम आत्मा के मन के बारे में बात कर रहे हैं।

मैं इसे किसी ऐसे व्यक्ति के बीच संघर्ष के रूप में देखता हूं जिसके पास शरीर का मन है और आत्मा का मन है, बल्कि जो लोग शरीर में हैं बनाम जो आत्मा में हैं उनके बीच संघर्ष के रूप में देखता हूं। और जिनके पास हमारी सोच में आत्मा का इनपुट है, हमारे पास आत्मा का दिमाग है। खैर, इससे उनका क्या तात्पर्य है? फोनेमा, जिस शब्द का वह यहां उपयोग करता है, उसका अक्सर मन के रूप में अनुवाद किया जाता है, इसका अर्थ स्वभाव, मन का ढाँचा, सोचने का तरीका हो सकता है, या कभी-कभी इसका मतलब केवल मन होता है, जैसा कि संभवतः बाद में अध्याय 8, छंद 26 और 27 में होगा, जहां यह ईश्वर के अपने मन को संदर्भित करता है।

आत्मा का मन परमेश्वर की आत्मा का मन है। हम नहीं जानते कि जिस तरह से आवश्यक है उस तरह से प्रार्थना कैसे करें, लेकिन आत्मा अस्पष्ट कराहों के साथ हमारे लिए हस्तक्षेप करता है। और दिलों का जांचने वाला आत्मा के मन को जानता है क्योंकि वह भगवान के प्रति समर्पित लोगों के लिए भगवान के अनुसार मध्यस्थता करता है।

इसलिए, जब वह आत्मा के मन के बारे में बात करता है, तो वास्तव में, इस संदर्भ में, इसमें ईश्वर की अपनी आत्मा की गतिविधि और ईश्वर की अपनी सोच हमारे सोचने के तरीके को प्रभावित कर सकती है। और जो कुछ हम यहां देखते हैं वह महत्वपूर्ण है, मैं नास्तिकता से धर्म परिवर्तन के बाद अपने ईसाई जीवन के आरंभ में एक परंपरा में था, मेरे दिमाग में यह विचार आया कि मैंने विभिन्न स्थानों पर सुना था, हमें समझने की आवश्यकता नहीं है, हमें हमें अपने दिमाग का

उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है, हमें बस अपनी आत्मा में रहस्योद्घाटन प्राप्त करने की आवश्यकता है। और मुझे लगता है कि मैं कुछ हद तक उस ओर आकर्षित हुआ क्योंकि मैं अपने रूपांतरण से पहले अपने मन के प्रति मूर्तिपूजक था।

तो, आप जानते हैं, मैं यह सोच रहा था, मैं बाइबिल पढ़ रहा था, मैं वास्तव में इसे समझने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मैं कह रहा था, नहीं, मैं बस अपनी आत्मा में रहस्योद्घाटन प्राप्त करने की कोशिश कर रहा हूँ। और एक दिन मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे पवित्र आत्मा कह रही थी कि भगवान चाहते थे कि मैं पवित्रशास्त्र में कुछ समझूँ, और मैंने कहा, नहीं, मुझे इसे समझने की ज़रूरत नहीं है, मुझे बस अपनी आत्मा में रहस्योद्घाटन प्राप्त करने की ज़रूरत है। तो, भगवान ने एक ही बार में मेरे दिमाग में लगभग दस पाठों को कौंध दिया, और मुझे लगा, ओह, मुझे लगता है कि मुझे इसे समझने की ज़रूरत है, क्योंकि ये समझने के बारे में पाठ थे।

और निःसंदेह, आपके पास 1 कुरिन्थियों 14 है, जहां यह आपकी आत्मा से प्रार्थना करने, अपनी समझ से भी प्रार्थना करने, उस संदर्भ में भाषा और व्याख्या के बारे में बात करता है। लेकिन दोनों ही मूल्यवान हैं। संभवतः हमारा भावनात्मक आयाम और हमारा संज्ञानात्मक आयाम दोनों।

खैर, कुछ हलकों में हम एक को दूसरे से अधिक महत्व देते हैं, और, आप जानते हैं, हम भी अलग-अलग तरीकों से बने हैं। मेरा मतलब है, हममें से कुछ लोग स्वाभाविक रूप से दूसरे की तुलना में एक की ओर अधिक आकर्षित होते हैं, लेकिन फिर भी, हमें पूरे व्यक्ति की देखभाल करने की आवश्यकता है। कुछ लोग इस बात पर ज़ोर देना पसंद करते हैं कि हमारे पास अध्याय 8 और पद 16 में क्या है, आत्मा हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है, और यह सच है।

लेकिन जो भावना हम यहां देखते हैं वह हमारे विश्वदृष्टिकोण और हमारी सोच को आकार देने में भी मदद करती है। इसलिए, आत्मा न केवल हमारी आत्मा पर कार्य करती है, बल्कि परमेश्वर की आत्मा हमारे मन पर भी कार्य करती है। बहुत से लोग उस धारणा से शुरुआत करते हैं, लेकिन चूंकि मैंने कुछ समय के लिए विपरीत धारणा अपना ली थी, इसलिए मैं यह जानकर बहुत उत्साहित हुआ कि यह भी मन है।

आत्मा परमेश्वर के मन को प्रकट करती है। कभी-कभी प्राचीन विचारक दिव्य मन के बारे में बात करते थे, और वे अपने भीतर दिव्य मन होने की बात करते थे और वे दिव्य मन को साझा कर रहे थे। अब, पॉल उन विचारकों तक नहीं जाएंगे जिन्होंने कहा था कि हम वास्तव में परमात्मा का हिस्सा बन जाते हैं।

पॉल कभी भी उस तरह की भाषा का इस्तेमाल नहीं करते। वह हमेशा उससे बहुत कम पर रुकता है। तो, ऐसा नहीं है कि हम भगवान बन जाते हैं, लेकिन वह निश्चित रूप से हम में भगवान की आत्मा के साथ विश्वास करता है कि भगवान हमें प्रभावित करते हैं, ठीक उसी तरह जैसे पुराने नियम में भगवान की आत्मा भविष्यवक्ताओं को अभिभूत कर देती थी, और वे भगवान के दिल और दिमाग की बात करते थे, और नये नियम में भी।

कभी-कभी प्राचीन विचारक दिव्य मन की बात करते थे। 1 कुरिन्थियों 2:10 में, पॉल कहता है कि विश्वासी हमारे भविष्य के गौरव के बारे में जानते हैं क्योंकि पवित्र आत्मा ईश्वर की गहराई की खोज करता है। वह भाषा थी।

ज्ञान साहित्य में, यह ईश्वर की गहराई के बारे में बात करता है, और ज्ञान, दिव्य ज्ञान आदि के माध्यम से हमारी उस तक पहुंच होती है। रोमियों 8:26 और 27, परमेश्वर आत्मा के मन को जानता है, और इस प्रकार विश्वासियों के भीतर आत्मा की हिमायत सुनता है। तो शायद यहाँ यह विचार है कि चूँकि आत्मा हमारे अंदर है, हम ईश्वर के हृदय के साथ अधिक तालमेल बिठा सकते हैं, ईश्वर कैसा महसूस करता है, ईश्वर चीज़ों की परवाह कैसे करता है, ईश्वर चीज़ों को कैसे देखता है।

निश्चित रूप से, आत्मा के बिना होने की तुलना में हम इसके अधिक अनुरूप हैं, जहां हम रोमियों 1 या रोमियों 7 की तरह हैं। रोमियों 7 रोमियों 1 से बेहतर है। यह कानून द्वारा सूचित है, लेकिन एक ऐसा दिमाग जिसके पास नहीं है रोमियों 1 में पूरी तस्वीर पाप से दूषित है। तो, आत्मा न केवल हमारी आत्मा को, बल्कि हमारे मन को भी प्रभावित करती है, और हमारे पास आत्मा के विचार का मन है। इसके अलावा, 1 कुरिन्थियों 2 में, मैं इस अनुच्छेद पर प्रकाश डालने के लिए विषयांतर करना चाहता हूँ।

अब रोम के लोग वह नहीं कर सकते जो मैं अभी कर रहा हूँ, मण्डली के उन नेताओं को छोड़कर जो कुरिन्थ में पॉल की शिक्षाओं को जानते होंगे यदि वे पॉल के साथ कुरिन्थ में होते या उसे कहीं जानते थे, और फिर वे रोम वापस आ गए होते इस समय 54 के बाद, क्लॉडियस की मृत्यु के बाद। लेकिन जब पॉल ने कुरिन्थियों के बारे में लिखा, तो उनके पास कुछ पृष्ठभूमि थी जिसे पॉल को समझाने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि पॉल उनमें से थे, सिवाय उन लोगों के जो तब से परिवर्तित हो गए थे। और रोम में, ध्यान रखें कि जब आप किसी के माध्यम से पत्र भेजते हैं, यदि उनके पास कोई प्रश्न है, तो वे उस व्यक्ति से स्पष्टीकरण मांग सकते हैं।

तो, पॉल ने फोएबे के माध्यम से एक पत्र भेजा। वह पॉल की शिक्षाओं और अन्यत्र पॉल के व्यक्तित्व के बारे में जो कुछ जानती थी, उसके आधार पर वह इनमें से कुछ विवरणों को समझाने में सक्षम हो सकती थी। इसलिए, हम इस पर पॉल की कुछ अन्य शिक्षाओं का उपयोग करने का प्रयास करने जा रहे हैं ताकि वह यहां जो कह रहा है उसे स्पष्ट करने में मदद मिल सके।

1 कुरिन्थियों 2, पद 6-10। इस युग के शासकों ने शाश्वत ज्ञान को नहीं समझा। वह इस बारे में बात कर रहा है कि परमेश्वर की बुद्धि दुनिया की बुद्धि की तरह नहीं है, बल्कि क्रूस की बुद्धि के विपरीत है।

उनका कहना है कि इस युग के शासकों ने शाश्वत ज्ञान को नहीं समझा। इसलिये उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। लेकिन हम आध्यात्मिक रूप से परिपक्व लोगों के बीच ज्ञान की बात करते हैं, लेकिन यह इस युग का या इसके शासकों का ज्ञान नहीं है जो शून्य होते जा रहे हैं।

इसलिए, हम इस युग के ज्ञान को नहीं बोलते हैं, जिसे इस युग में ज्ञान के रूप में महत्व दिया जाता है, बल्कि हम ईश्वर के शाश्वत दृष्टिकोण से ज्ञान को बोलते हैं। हम चीजों को अनंत काल की रोशनी से देखते हैं। हम भगवान के शाश्वत ज्ञान की बात करते हैं।

वह कहते हैं, इस युग के शासकों से छिपा हुआ। यह उस ज्ञान के प्रति उनकी अज्ञानता थी कि उन्होंने सबसे गौरवशाली और सम्माननीय शासक, प्रभु, को शर्मनाक क्रूस पर चढ़ा दिया। प्रासंगिक बिंदु को सामने लाने का प्रयास करने के लिए 1 कुरिन्थियों में इसका अनुवाद करने का यह मेरा तरीका है।

वह कहते हैं, इस युग के शासकों ने शाश्वत ज्ञान को नहीं समझा, और इसलिए वह हमें अनंत काल के दृष्टिकोण से भविष्य के युग का ज्ञान प्राप्त करने के लिए कहते हैं। खैर, परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रदान किया गया यह शाश्वत ज्ञान श्लोक 9 और 10 में प्रकट होता है। पॉल इस ज्ञान के बारे में इस तरह से बात करता है।

वह धर्मग्रंथ का उद्धरण देता है। वह कहता है, क्योंकि बाइबल कहती है, जो बातें आंखों ने नहीं देखीं, और कानों ने नहीं सुनीं, और न लोगों ने कल्पना की, ऐसी ही बातें हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार किया है। लेकिन फिर वह उसमें उत्तीर्ण हो जाता है।

खैर, ये शाश्वत चीजें हैं, आने वाली वादा की गई चीजें हैं। उसके लिए धर्मग्रंथ उद्धृत करें। फिर यह कहता है, परन्तु परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा ये गुप्त बातें हम पर पहिले से ही प्रगट कर दी हैं।

आत्मा के द्वारा हमें उस आने वाले संसार का पहले से ही स्वाद मिल जाता है। पॉल 1 कुरिन्थियों 13:9 में भी कहता है, हम देना जानते हैं, हम भविष्यवाणी करते हैं। तो, इसका मतलब यह नहीं है कि हमारे पास पूरी तस्वीर है।

हम इसके बारे में पहले भी बात कर चुके हैं। लेकिन इसका मतलब यह है कि हमें उस आने वाली दुनिया का पहले से ही अंदाज़ा है। वह यहाँ यशायाह 64 पद 4 को प्रतिध्वनित कर रहा है, नश्वर लोग परमेश्वर के तरीकों की थाह लेने में असमर्थ हैं, लेकिन आत्मा अनन्त भविष्य का अग्रिम भुगतान है।

इसके बारे में हम पॉल के लेखन में अन्यत्र भी पढ़ते हैं। यह हमारी ओर से नहीं है। यह भगवान का उपहार है।

कभी-कभी हमें इसका पूर्व-स्वाद ईश्वर की उपस्थिति में एक गहन पूजा की तरह अनुभव हो सकता है। वह आत्मा की अंतर्दृष्टि के बारे में अध्याय दो, श्लोक 10 से 15 में बात करता है, जहां आत्मा एक प्रकटकर्ता के रूप में कार्य करती है। वह कहते हैं, आपके दिल की हर बात कोई और नहीं जानता।

एकमात्र व्यक्ति जो आपके दिल को जानता है वह आपकी अपनी आत्मा है, है ना? लेकिन केवल परमेश्वर की आत्मा ही परमेश्वर के हृदय को जानती है और इसलिए केवल परमेश्वर की आत्मा ही परमेश्वर के हृदय को हमारे साथ साझा कर सकती है। और वह यह कि, वह हमारे साथ परमेश्वर

का हृदय कैसे साझा करता है? खैर, हम पहले ही देख चुके हैं जैसे रोमियों 5:5 में, वह हमें हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम की याद दिलाता है। हम रोमियों 8:15 और 16 में देखने जा रहे हैं, पवित्र आत्मा हमें पुकारता है, हे अब्बा, हे पिता, और हमारी आत्मा से गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं, हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

यूहन्ना 16, श्लोक 13 से 16 में आपका एक समान विचार है, जहां ध्यान यीशु को प्रकट करने वाली आत्मा पर है, हमारे सामने परमेश्वर के हृदय को प्रकट करने, उन चीजों को प्रकट करने पर है जो परमेश्वर के लिए हमारे लिए मायने रखती हैं। तो, इसका मतलब यह नहीं है कि आत्मा हमारे दैनिक जीवन में चीजों के बारे में हमसे बात नहीं करती है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आत्मा हमसे बात करने के लिए आती है, वह है भगवान के दिल को, भगवान की गहराई को, हमारे सामने प्रकट करना। भगवान की गहरी बातें, जैसा वह कहते हैं। खैर, परमेश्वर की आत्मा के बारे में हमारी समझ इस बात से भिन्न है कि लोगों को संसार की आत्मा से क्या प्राप्त हो सकता है।

पॉल को इस बात पर जोर देना होगा कि 1 कुरिन्थियों में क्योंकि कुरिन्थ में मूल्यांकन की एक व्यापक संस्कृति थी, और भाषणों और अन्य सभी चीजों सहित सार्वजनिक प्रतियोगिताएं थीं। आपके प्रतिद्वंद्वी शिक्षक थे जिनके शिष्य कभी-कभी एक-दूसरे से झगड़ पड़ते थे। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि कोरिन्थियन मूल्यांकन के सांसारिक तरीकों का उपयोग कर रहे हैं।

यदि वे पॉल और अपोलोस का मूल्यांकन कर रहे हैं, तो केवल यह लेने के बजाय कि भगवान उन्हें उनके माध्यम से क्या दे रहा है, वे सांसारिक मानदंडों का उपयोग कर रहे हैं। अच्छा, बेहतर वक्ता कौन है? खैर, अपोलोस बेहतर वक्ता है, इसलिए हम अपोलोस का अनुसरण करते हैं। पॉल ने जवाब दिया, आप नहीं चाहते कि ईसाई सेलिब्रिटी पंथ हों।

यह यह शिक्षक या वह शिक्षक नहीं है। खैर, यह लड़का बेहतर वक्ता है। मुझे यह लड़का पसंद है या यह व्यक्ति ग्रीक बेहतर जानता है।

मैं इस व्यक्ति का अनुसरण करूंगा. भगवान ने हमें कई उपहार दिए हैं और हमें उन सभी की सराहना करनी चाहिए और सांसारिक मानदंडों का उपयोग नहीं करना चाहिए जिस तरह से दुनिया अपनी हस्तियों का मूल्यांकन करती है। हमें चर्च में ऐसा नहीं करना चाहिए।

हमें मशहूर हस्तियों को नहीं रखना चाहिए। सबसे बड़ा सबसे छोटा होगा. सत्य का आकलन करने के लिए हमें आध्यात्मिक क्षमता की आवश्यकता है।

कभी-कभी हम सांसारिक मूल्यांकन मानदंडों का उपयोग करते हैं। हर कोई विश्वदृष्टिकोण से शुरुआत करता है। हर कोई एक रूपरेखा, चीजों को देखने के एक तरीके से शुरुआत करता है।

जब दुनिया चमत्कारों को देखती है, तो वे कहते हैं, अच्छा, अक्सर, अच्छा, यह इस पर निर्भर करता है कि आप किस संस्कृति का हिस्सा हैं। आप उस संस्कृति का हिस्सा हो सकते हैं जहां वे कहते हैं, ठीक है, हम चमत्कारों में विश्वास नहीं करते हैं। आप उन्हें जितना चाहें उतना सबूत दे सकते हैं और वे कुछ और स्पष्टीकरण लेकर आएंगे।

खैर, मेरे पास इसके लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं है, लेकिन किसी दिन कोई स्पष्टीकरण होगा। या कुछ संस्कृतियों में, आपका भगवान चमत्कार करता है। मेरा भगवान चमत्कार करता है।

क्या फर्क पड़ता है? हर कोई एक रूपरेखा के साथ शुरुआत करता है। क्या हम चीजों के मूल्यांकन के लिए सही ढांचे से शुरुआत करते हैं? यदि हमने मसीह को स्वीकार कर लिया है, यदि हमने पहले ही मसीह के लिए अपना निर्णय ले लिया है, यदि हमने पहले ही स्वीकार कर लिया है कि ईश्वर का मार्ग अधिक बुद्धिमान है, तो हमें किसी विपरीत ढांचे के बजाय उस आधार और उस विश्वदृष्टि, उस ढांचे से शुरुआत करनी चाहिए। एक विद्वान के रूप में मैंने अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा हर विवरण की खोज करने, हर किसी के प्रति निष्पक्ष होने की कोशिश करने और हर विश्वदृष्टिकोण के प्रति निष्पक्ष होने और इसके माध्यम से काम करने में बिताया।

एक विद्वान के रूप में वह अच्छा था। लेकिन अंततः, मैं उस स्थान पर पहुंच गया जहां मेरे ऐतिहासिक यीशु शोध के बीच में, मैं बस हर संभव तर्क की जांच करने की कोशिश कर रहा था और मैं अपने अध्ययन से बाहर आऊंगा और मेरी पत्नी मुझसे कुछ कहेगी और मैं कहूंगा, क्या आप मुझे उस दावे के लिए सबूत दे सकते हैं? अब, मैं आपको आश्चस्त कर सकता हूं कि चाहे आप समतावादी हों या पूरक, यदि आप ऐसा कुछ कहेंगे तो आप मुसीबत में पड़ जाएंगे। इसलिए, मुझे इस तथ्य को समझना पड़ा कि अगर मेरी पत्नी कुछ कहती है, तो वह एक विश्वसनीय गवाह है।

जब तक मेरे पास यह सोचने के लिए बाध्यकारी कारण न हो कि उसने गलती की है या कुछ और है, मुझे उसकी बात मानने के लिए तैयार रहना चाहिए जो वह कहती है कि उसने देखा है, जो कुछ वह कहती है कि घटित हुआ है। खैर, उसी तरह, मैं काम कर रहा था, अतिरिक्त सबूत और सबूत के तरीकों की तलाश करने की कोशिश कर रहा था। लेकिन अगर हम विश्वसनीय गवाहों और विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त पाठों के साथ काम कर रहे हैं, तो वे पाठ स्वयं भी साक्ष्य हैं।

और मुझे एहसास हुआ, ठीक है, एक चीज़ है जो हम अकादमी के नियमों के अनुसार करते हैं और यदि यह आम बातचीत के लिए न्यूनतम आधार है जिसका हम उपयोग करते हैं, तो हम समझते हैं कि उन परिस्थितियों में हम यही भाषा बोलते हैं। लेकिन यह कोई कार्यशील ज्ञानमीमांसा नहीं है, ज्ञान को समझने का एक कार्यशील तरीका नहीं है जिसके आधार पर हम जीते हैं। इसके बजाय, हम मानते हैं कि कुछ चीजें हैं जो हम जानते हैं क्योंकि हमारे पास उसके लिए विश्वसनीय साक्ष्य हैं।

और मुझे स्वयं अपने जीवन में इससे अधिक जूझना पड़ा। ज्ञानमीमांसा वह तरीका है जिससे हम चीजों को जानते हैं। चीजों को जानने के लिए अक्सर यह हमारी शुरुआती धारणाएं होती हैं।

और फिर, हर किसी के पास उनमें से कुछ है। और जानने के विभिन्न तरीके हैं। विज्ञान में, आप अवलोकन और प्रयोग का उपयोग करते हैं, और यह अच्छा है।

मेरा मतलब है, वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें यही चाहिए। लेकिन ऐसी चीजें हैं जिनके बारे में हम जानते हैं कि हम उन पर प्रयोग नहीं कर सकते। इतिहास में, कानून में,

पत्रकारिता में, मानवविज्ञान में, समाजशास्त्र में, आपको अक्सर प्रत्यक्षदर्शी गवाही पर निर्भर रहना पड़ता है।

और यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप वापस जाकर उस घटना को दोबारा कर सकें। यदि यह किसी के मरने जैसा है, तो आप ऐसा दोबारा करने के लिए उन्हें दोबारा नहीं मार सकते। इसलिए, ज्ञानमीमांसीय ढाँचे या ज्ञानमीमांसीय ढाँचे के संदर्भ में, हमें उस ढाँचे का उपयोग करना होगा जो अनुशासन के लिए उपयुक्त हो।

यदि ईश्वर ने हमें धर्मग्रंथों में बातें बताई हैं, और हमारे पास पहले से ही उस पर विश्वास करने का अच्छा कारण है, और इसीलिए हम उसके अनुयायी बन गए हैं, तो हमें उसके वचन को मानने के लिए तैयार रहना होगा। डेविड ह्यूम ने एक बहुत ही संकुचित ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण का उपयोग किया जहाँ इसे आपके द्वारा अनुभव की गई किसी चीज़ पर निर्भर होना पड़ता था, या कम से कम आपके निकटतम सर्कल में किसी के अनुभव पर निर्भर होना पड़ता था। अब, ह्यूम ने स्वयं कहा कि अपने अध्ययन के बाहर, वह इसका अनुसरण नहीं कर सकता।

हम ऐसी संकुचित ज्ञानमीमांसा के अनुसार नहीं जीते हैं। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसे हम एक विशेष अनुशासनात्मक क्षेत्र में उपयोग कर सकते हैं, लेकिन इसमें सब कुछ शामिल नहीं है। इसलिए, विश्वदृष्टि के संदर्भ में, हम आध्यात्मिक चीजों का मूल्यांकन करते हैं, पॉल कहते हैं, आध्यात्मिक द्वारा।

उनका कहना है कि बहुत से लोग आत्मा के मामलों को समझने के योग्य नहीं हैं। यहाँ एक कार्टून है। मैं आपका पादरी बनना चाहूंगा, लेकिन मुझे नहीं पता कि मैं योग्य हूँ या नहीं। यह कोआला भालू है।

पॉल प्राकृतिक, मानसिक व्यक्ति बनाम आध्यात्मिक व्यक्ति की तुलना करता है। खैर, साइकिको से उसका क्या मतलब है? वह उस वाक्यांश का उपयोग उसी पत्र में कहीं और करता है, 1 कुरिन्थियों 15.44, जहाँ वह एक मानसिक शरीर बनाम एक आध्यात्मिक शरीर की बात करता है।

यहाँ साइकिको का मतलब आत्मा से बना शरीर नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक शरीर का मतलब सिर्फ आत्मा से बना शरीर है। यह संभवतः उत्पत्ति 2:7 के ग्रीक अनुवाद की ओर इशारा कर रहा है, क्योंकि वह अगले श्लोक में आदम को जीवित प्राणी के रूप में बोलने जा रहा है। क्या एडम एक जीवित आत्मा है? खैर, इसका मतलब सिर्फ इतना है कि आदम ईश्वर की आत्मा से अलग, अपने आप में एक जीवित प्राणी है।

तो, हम या तो अपना जीवन चला रहे हैं, पसुचिकोस जीवन, जिसे शारीरिक जीवन के रूप में भी जाना जाता है, या हम भगवान को समर्पित कर रहे हैं। हमारे भीतर ईश्वर की आत्मा है, जो एक नई गतिशीलता, एक अतिरिक्त गतिशीलता दे रही है, ताकि हम अंततः अपने लिए नहीं जी रहे हैं, बल्कि हम ईश्वर के लिए जी रहे हैं। पॉल ने धर्मग्रंथ का हवाला देते हुए कहा है, आप जानते हैं, यहाँ वह भविष्य है जिसका हमसे वादा किया गया है।

हमें आत्मा में इसका पूर्वाभास है। अब वह 1 कुरिन्थियों 2 में यशायाह 40:13 से एक और पाठ उद्धृत करने जा रहा है। इस बार का पाठ बिल्कुल वैसा ही कुछ कहता है। मनुष्य परमेश्वर के तरीकों को समझने में असमर्थ हैं।

लेकिन फिर, पॉल इसे योग्य बनाता है। वह कहते हैं, हमारे पास आत्मा है। पॉल ग्रीक और हिब्रू दोनों संस्करणों से परिचित है।

यशायाह 40:13 का हिब्रू कहता है, कौन जाना जाता है? वह प्रभु की आत्मा के बारे में बात करता है। लेकिन यूनानी अनुवाद कहता है, कौन जाना जाता है? प्रभु का मन. तो, वह भगवान के मन और भगवान की आत्मा की पहचान करने जा रहा है।

और यशायाह 40:13 का हवाला देते हुए, वह कहता है, अच्छा, कौन जानता है? प्रभु का मन. वह इस बारे में बात कर रहे हैं कि कैसे हममें ईश्वर का मन देने की भावना है। और वह आगे कहता है, हमारे पास मसीह का मन है, मसीह की पहचान ईश्वर के साथ की जाती है।

तो, हम आत्मा के माध्यम से भगवान के दिल को जानते हैं। तो, पॉल कहते हैं, हमारे पास शरीर के मन के विपरीत आत्मा का मन है, यहाँ रोमियों अध्याय 8 में। अब, एक चीज जिससे मैं एक युवा ईसाई के रूप में संघर्ष करता था जब मैंने इसे पहली बार पढ़ा था, मैंने कहा, ओह लड़के, हमें शरीर के बजाय आत्मा में रहना होगा। अपने रूपांतरण से पहले, मैंने प्लेटो को बहुत पढ़ा था और मैं इसमें प्लेटोनिक द्वैतवाद को पढ़ रहा था जैसे कि हम भगवान की आत्मा के बारे में नहीं, बल्कि हमारी आत्मा के बारे में बात कर रहे हों।

तो, ऐसा लगता है कि कभी-कभी मैं चीजों के बारे में सोच रहा हूँ और कह रहा हूँ, अरे नहीं, मैं अभी देह में हूँ। और यह ऐसा था मानो, आप जानते हैं, आपका उद्धार आता है और चला जाता है। यहाँ मुद्दा बिल्कुल भी ऐसा नहीं है।

यहां बात दो तरह के लोगों की है। और इसका मतलब यह नहीं है कि अगर कोई व्यक्ति कभी भी कुछ ऐसा करता है जिसे हम शरीर कहते हैं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह व्यक्ति मसीह में नहीं है। इसका मतलब यह है कि अंतर यह है कि जो लोग देह में हैं, उनके पास बस इतना ही है।

वे स्वयं पर और उन लोगों पर निर्भर हैं जो आत्मा में हैं। खैर, आप इतने स्पष्ट भेद का उपयोग कैसे कर सकते हैं? ठीक है, क्योंकि प्राचीन काल में, एक अलंकारिक रूप जो आमतौर पर पुराने नियम और ग्रीको-रोमन दुनिया दोनों में उपयोग किया जाता था वह आदर्श प्रकार का था। मानवता में हमारे पास आदर्श प्रकार की दो श्रेणियां हैं।

और यहां हम शारीरिक लोगों और आध्यात्मिक लोगों के बारे में देखने जा रहे हैं। विरोधाभास, शारीरिक लोग, यही हम आदम में थे। हम केवल मांस हैं।



और आत्मा लोग, हम मसीह में क्या हैं। देहधारी लोग, वे लोग जो अधिक से अधिक अपनी धार्मिकता पर निर्भर हैं, वे जो अपने स्वयं के जुनून के अधीन हैं। और आत्मा लोग, वे जो परमेश्वर की धार्मिकता पर निर्भर हैं, वे जिनमें मसीह का मन हमें सोचने का एक उच्च तरीका दे सकता है।

अब, आदर्श प्रकार पूरी तरह से या तो या तो नहीं हैं। अपूर्णता का अपने आप में यह मतलब नहीं है कि हम पुनर्जीवित नहीं हुए हैं, कि हम मसीह में एक नए व्यक्ति नहीं बने हैं। फिलिप्पियों 3 में पॉल बोलता है कि वह कैसा है, वह अधिक परिपक्वता की ओर आगे बढ़ रहा है, पीछे मुड़कर नहीं देख रहा है कि वह कहाँ से आया है, बल्कि वह आगे बढ़ता जा रहा है।

हमारे पास अभी भी पुराने ट्रिगर्स के प्रति सहज प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम वैसे ही हैं जैसे हम आस्तिक बनने से पहले थे। आदर्श प्रकारों के रूप में मानवता में दो श्रेणियों का यह विचार एक मान्यता प्राप्त अलंकारिक रूप था। स्टोइक आदर्श ऋषि बनाम मूर्खों की बात करेंगे।

आपको मिल गया है, यहाँ बुद्धिमान व्यक्ति है, यहाँ है, यहाँ मूर्ख है। लेकिन जब स्टोइक्स ने उस तरह का भेद किया, तो अगर आपने उनसे पूछा, अच्छा, क्या आप इतने बुद्धिमान व्यक्ति हैं? वे कहेंगे, ठीक है, नहीं, मैंने अभी तक वह हासिल नहीं किया है, लेकिन मैं वह बन रहा हूँ। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसने यह उपलब्धि हासिल की है? क्या आप किसी बुद्धिमान व्यक्ति को जानते हैं? खैर, नहीं, हम उस लक्ष्य की ओर प्रगति कर रहे हैं।

मैं कभी किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं मिला जिसने इसे पहले ही हासिल कर लिया हो। क्या आप मूर्ख व्यक्ति हैं? नहीं नहीं नहीं नहीं। मैं बुद्धि में प्रगति कर रहा हूँ।

तो, स्टोइक्स, जब उन्होंने बुद्धिमान व्यक्ति बनाम मूर्ख की इस भाषा का उपयोग किया, तो समझ में आया कि वे आदर्श प्रकार के संदर्भ में बोल रहे थे। क्या यहूदी लोगों ने कभी ऐसा किया? बिल्कुल। नीतिवचन देखो।

आपके पास बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख दोनों हैं। आपको दुष्ट बनाम धर्मी व्यक्ति मिल गया है। आपके पास मृत सागर स्कॉल में वह फिर से है जहां संभवतः एस्सेन्स, कुमरान संप्रदायवादी भी प्रकाश के बच्चों बनाम अंधेरे के बच्चों के बारे में बात करेंगे।

ठीक है, यदि आप उनके आंदोलन का हिस्सा थे, तो आप प्रकाश के बच्चे थे, लेकिन आपने उनकी कुछ प्रार्थनाएँ पढ़ीं। हे भगवान, केवल आप ही मुझे धर्मी बनने में मदद कर सकते हैं। वे समझ गए कि उन्हें अनुग्रह की आवश्यकता है, और उन्होंने अनुग्रह के लिए परमेश्वर को पुकारा।

उन्होंने अनुग्रह के लिए ईश्वर की आत्मा का आह्वान किया, लेकिन कुछ अन्य तरीकों से वे अभी भी काफी कानूनी थे और सख्ती से नियंत्रित थे। लेकिन किसी भी मामले में, मिश्रण का विचार। व्यक्तियों में बुद्धि और मूर्खता, धार्मिक और दुष्ट व्यवहार का मिश्रण होता है, लेकिन जो भी हो, आपके पास ऐसे लोग हैं जो आम तौर पर धार्मिक या आम तौर पर दुष्ट होते हैं।

आपके पास 1 जॉन में इसी तरह का विरोधाभास है। 1 यूहन्ना 3 और पद 9, जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता। लेकिन अध्याय 1 और श्लोक 8 में, यदि हम दावा करते हैं कि हमने कोई पाप नहीं किया है, तो हम स्वयं को धोखा देते हैं।

अध्याय 2 और पद 1, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिख रहा हूँ ताकि तुम पाप न करो। लेकिन अगर कोई पाप करता है, तो वह विरोधाभास का उपयोग करता है, जो एक अलंकारिक तकनीक भी थी। इसका उपयोग यीशु ने कुछ पहेलियों में किया था, जिनके बारे में उन्होंने बताया था कि लोग यह जानने की कोशिश कर रहे थे कि वह किस बारे में बात कर रहे थे।

जॉन 1 जॉन में भी इसका उपयोग करता है, जहां आपको पूर्ण परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने के लिए कुछ चीजों को तनाव में रखना पड़ता है। भेदभाव की बात, आदम में, लोगों के पास निर्भर रहने के लिए केवल शरीर की शक्ति है। मसीह में, हमारे पास आत्मा की शक्ति है, और इस प्रकार हमारे पास एक नए मार्ग तक पहुंच है।

रोमियों 8 में, वह इस बारे में बात करने जा रहा है कि आत्मा का मन शांति कैसे है। खैर, इसका क्या मतलब है, आत्मा का मन शांत है? हम यूनानी दार्शनिकों में शांत मन के बारे में पढ़ते हैं। वे इसी तरह से काम करने की कोशिश कर रहे थे।

वे सभी चिंताओं को वश में करने का प्रयास करने वाले थे। अब, आप इसे सूक्ष्म रूप से प्रबंधित करने का प्रयास कर सकते हैं और अपनी चिंता के बारे में और अधिक चिंतित हो सकते हैं। वास्तव में मैं खुद ही इससे गुजरा था, हालांकि मेरे मामले में यह कुछ मलेरिया-रोधी दवाओं से प्रेरित था, जो मैं तब ले रहा था जब मैं और मेरी पत्नी कोटे डी आइवर में जातीय सुलह के बारे में 1,700 पादरियों से बात कर रहे थे।

लेकिन मैं जो मलेरिया की दवा ले रहा था, उसका कुछ लोगों पर मानसिक प्रभाव पड़ा और मुझे घबराहट के दौरे पड़ने लगे। मुझे नहीं पता था कि वे क्या थे, और इसलिए मैं पैनिक अटैक के बारे में घबराने लगा। निःसंदेह, वे एक-दूसरे को तब तक खाते रहे जब तक हमें यह पता नहीं चल गया कि ओह, अब उसे वह दवा मत दो।

दार्शनिकों ने शांत मन रखने पर जोर दिया। जब पॉल शांतिपूर्ण मन की बात करता है तो एक संभावित व्याख्यात्मक आधार होता है। यह यशायाह 26 और श्लोक 3 है, जहां मन उस पर रुका था, और इसे संदर्भ में देखने का एक तरीका और ग्रीक संस्करण की तुलना करना कुछ ऐसा हो सकता है जैसे वह मन जो उस पर भरोसा करता है, वह मन जो प्रभु में रुका है। शांति रखें, और यह संभव है कि पॉल उसी से सीख ले रहा हो।

आत्मा के मन में शांति होने का क्या मतलब है? खैर, अपने लेखन में अन्यत्र भी वे कुछ इसी तरह संबोधित करते हैं। फिलिप्पियों 4:6, चिंता मत करो। वह चिंता के बारे में बात नहीं कर रहा है जैसे कि आपके तंत्रिका तंत्र में कुछ, बल्कि वह उस चीज़ के बारे में बात कर रहा है जो हम अपने दिमाग से करते हैं।

चिंता न करें, बल्कि इसके बजाय, ऐसा नहीं है कि आप सिर्फ दिखावा करें कि समस्याएँ हैं ही नहीं। इसके बजाय, उनके बारे में प्रार्थना करें। श्लोक 6 में भी इन मुद्दों को भगवान को सौंपें। फिर वह श्लोक 7 में कहते हैं, उनकी शांति आपके दिमाग की रक्षा करेगी।

श्लोक 8 में वे कहते हैं, अच्छी बातों पर सोचो और दार्शनिक इससे सहमत होंगे। अच्छी बातों पर विचार करें। इसका मतलब यह नहीं है कि आप स्वीकार नहीं कर सकते कि कुछ समस्या है, लेकिन जब समस्या आती है, तो इसे भगवान को सौंप दें, और आप उनकी अच्छाई और उनकी कृपा के बारे में सोच सकते हैं।

यह मन के लिए एक अच्छा अनुशासन है, लेकिन आत्मा का मन शांति है क्योंकि हम ईश्वर पर निर्भर रह सकते हैं, और इसका तात्पर्य शायद एक दूसरे के साथ शांति से भी है। रोमियों में अन्यत्र शांति की भाषा का प्रयोग इसी प्रकार किया जाता है, सबसे पहले ईश्वर के साथ शांति, लेकिन एक दूसरे के साथ भी शांति, रोमियों 12:18, 14.19। फ़िलिपियंस के संदर्भ में पारस्परिक संघर्ष शामिल है, इसलिए वह शायद यह भी चाहता है कि हम न केवल अपने आप में शांति रखें, बल्कि दूसरों के साथ भी, जहाँ तक यह हम पर निर्भर करता है, जैसा कि वह रोमियों 12 में इसे योग्य बनाता है। कभी-कभी कोई आपके साथ झगड़ा करना चाहता है, और आप इससे परेशान होने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, लेकिन आप वह भी नहीं कहने जा रहे हैं जो वे आपसे कहलवाना चाहते हैं।

मुझे लगता है कि यह हमें लंबे समय में मजबूत बनाता है। लेकिन किसी भी मामले में, रोमियों 8 का यह पहला खंड, यह आदर्श प्रकार है। आप या तो अकेले हैं, या ईश्वर की आत्मा आप में काम कर रही है।

हम अध्याय 8 और पद 14 पर आते हैं। वह आत्मा के नेतृत्व में चलने की बात करता है। अब, यह संभवतः अन्य निर्गमन भाषा के संदर्भ में निर्गमन भाषा है जो हमारे पास अध्याय में है, जैसे मैथ्यू 4 और ल्यूक 4 में जब यीशु को जंगल में ले जाया जाता है।

मार्क में, उसे निष्कासित कर दिया गया है, उसे जंगल में फेंक दिया गया है, एकबालो, लेकिन उसे मैथ्यू और ल्यूक में आत्मा द्वारा जंगल में ले जाया गया है, और विशेष रूप से मैथ्यू में, आपको इसकी प्रतिध्वनि मिलती है। खैर, मैथ्यू और ल्यूक दोनों में, आपके पास जंगल में इज़राइल की गूँज और उद्धारण हैं जो जंगल में इज़राइल को दिए गए थे, यीशु के स्थान। किसी भी मामले में, यह शायद एक्सोडस भाषा है, लेकिन यह इस संदर्भ में लागू होती है, खासकर नैतिक मुद्दों पर।

आत्मा हमारी अगुवाई करता है। आत्मा हमें नैतिक रूप से कुछ गलत करने से रोकता है। आत्मा हमारे भीतर कार्य करते हुए हमें कुछ सही करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।

अब, ऐसा कहने का मतलब यह नहीं है, क्योंकि आज हम अक्सर आत्मा के नेतृत्व वाली अभिव्यक्ति का अधिक सामान्य तरीके से उपयोग करते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे अन्य तरीके गलत हैं। उदाहरण के लिए, अधिनियम मिशन के लिए शक्ति पर जोर देता है, और इसलिए हम देखते हैं, विशेष रूप से सांस्कृतिक बाधाओं को पार करने के लिए, अधिनियम

अध्याय 8 और श्लोक 29 में, आत्मा फिलिप से कहती है, जाओ, अपने आप को उस अप्रिकी अदालत के अधिकारी के रथ में शामिल करो। प्रेरितों के काम अध्याय 10 और पद 19 में, आत्मा पतरस से कहता है, मैं ने तेरे पास कुछ मनुष्य भेजे हैं, उनके संग जा।

खैर, ये गैर-यहूदी कुरनेलियुस के दूत हैं। अधिनियम अध्याय 16, पद 6 और 7, पॉल इस क्षेत्र या उस क्षेत्र में मंत्री बनना चाहता है। आत्मा उसे मना करता है।

तो, आत्मा को एक अलग योजना मिली। आत्मा हमें उन रास्तों पर ले जा सकती है, और मेरे साथ ऐसा कई बार हुआ है, जहां मुझे लगा कि आत्मा मुझे प्रेरित करती है, ठीक है, यह व्यक्ति तैयार है। मसीह को उनके साथ साझा करें।

या, वे मसीह को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। आगे बढ़ें और उन्हें ऐसा करने के लिए आमंत्रित करें। यह हमेशा एक एहसास नहीं होता।

हमें यह भी भरोसा है कि जैसे ही हम सुसमाचार साझा करते हैं, भगवान हमारे माध्यम से बोलते हैं, और हमारे माध्यम से कार्य करते हैं। सुसमाचार, ईश्वर की शक्ति सुसमाचार में है, चाहे हमें इसके बारे में कोई एहसास हो या नहीं। लेकिन कभी-कभी हमारे पास इस तरह का होता है, जैसे भगवान हमारी आत्मा के साथ-साथ हमारे दिमाग के साथ भी काम करता है, हमारे पास वह होता है जिसे हम आध्यात्मिक अंतर्ज्ञान कह सकते हैं।

फिर भी, कुछ लोग इस मामले में दूसरों से बेहतर हैं। और अगर यह पूरी तरह से भावनात्मक है तो कुछ लोग गहरे अंत तक चले जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे लोग गहरे अंत तक जा सकते हैं यदि यह पूरी तरह से संज्ञानात्मक है और वे हर चीज को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि हमारी आत्मा परिपूर्ण है या हमारा मन परिपूर्ण है, बल्कि यह है कि परमेश्वर की आत्मा परिपूर्ण है, और हम जिस भी तरीके से जिस पर हम निर्भर हो सकते हैं, उसमें हमारा मार्गदर्शन करने के लिए परमेश्वर की आत्मा पर निर्भर रहना चाहते हैं।

हाँ, मेरा मतलब है, कभी-कभी मैंने इसे बहुत नाटकीय तरीकों से अनुभव किया है। एक समय ऐसा था जब मैं वास्तव में बुधवार की रात की सेवा में रोमियों 8 को पढ़ाने के लिए तैयार हो रहा था। मैं अभी भी स्नातक था, लेकिन मैं उस चर्च में पढ़ा रहा था जहाँ मुझे एक नए आस्तिक के रूप में शिष्य बनाया गया था।

और मैंने महसूस किया कि आत्मा ने मुझे संकेत दिया है, आप आत्मा के नेतृत्व में चलने के बारे में बात करने जा रहे हैं। क्या आप इसका अनुभव करना चाहते हैं? मुझे ऐसा लगता है, ठीक है, अगर मैं भगवान का आशीर्वाद चाहता हूँ, तो बेहतर होगा कि मैं उसकी आज्ञा का पालन करूँ। और मैंने महसूस किया कि आत्मा मुझे घर के दरवाजे से बाहर, दूसरी सड़क, दूसरी सड़क तक ले गयी।

मैं आपको इन सड़कों के नाम बता सकता हूँ, लेकिन इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा। दूसरी सड़क तक, कुछ ब्लॉक, और फिर दूसरी सड़क तक। और फिर मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

मुझे नहीं पता था कि क्या हो रहा है. मैं मुड़ा, और मेरे सामने हाई स्कूल का एक पुराना दोस्त था। और वह जानता था कि मैं परिवर्तित हो गया हूँ।

मैंने अपने रूपांतरण के बाद उसे गवाही दी थी। लेकिन वह आस्तिक नहीं बना था, लेकिन वह उन कुछ लोगों में से एक था, जो भले ही आस्तिक नहीं बना था, क्योंकि मेरे कई दोस्त बन गये थे जब मैंने उनके साथ ईसा मसीह को साझा किया था, उसने भी मज़ाक नहीं उड़ाया था मुझे। मैंने जो किया उसका उन्होंने सम्मान किया.

और इसलिए, वह वहां बैठा था, और उसके बगल में लोरेना नाम की एक युवा महिला बैठी थी। अब, मैं लोरेना से मिला था, यह बुधवार था। मैं लोरेना से ठीक पिछले शुक्रवार को मिला था जब मैं दूसरे चर्च में एक युवा बैठक में बोल रहा था।

लोरेना बुरी तरह शराबी थी। उसे अलग-अलग घरों से निकाला जाता रहा. जब वह घर पर होती थी, तो वह अपनी माँ को अपने सामने अलग-अलग बॉयफ्रेंड के साथ सोते हुए देखती थी।

तो, वह बहुत परेशान अतीत से आई थी। इस समय उनका जीवन बहुत कष्टमय था। और फिर भी, मुझे पता था कि भगवान उस तक पहुंचना चाहते थे।

वह सुसमाचार के विरुद्ध कठोर लग रही थी। लेकिन मैंने उस शुक्रवार की रात प्रार्थना की, और मुझे लगता है कि मैंने उस सप्ताहांत प्रार्थना की थी कि भगवान किसी तरह उसे छू लें। खैर, अब, मेरा मतलब है, यह कोई बहुत बड़ा शहर नहीं था।

यह केवल 30,000 या उसके आसपास का शहर था। लेकिन मैंने पलट कर देखा तो लोरेना थी। उससे पिछले शुक्रवार तक मैं उससे कभी नहीं मिला था।

वह शहर के बिल्कुल अलग हिस्से में रहती थी। तो, मैं उनके पास चला गया। उस समय मुझे किसी विशेष झुकाव की आवश्यकता नहीं थी।

और मैं प्रार्थना कर रहा था कि भगवान उसे छू लें। हाई स्कूल का मेरा दोस्त जो आस्तिक नहीं था, उसने उसके साथ साझा करना शुरू कर दिया कि कैसे मेरा जीवन बदल गया था जब मैंने मसीह को स्वीकार कर लिया था और मेरे लिए उसकी गवाही देना शुरू कर दिया था। और मुख्य बात जिसने उसे पहले सुसमाचार की ओर विमुख कर दिया था, वह पाखंड को देखना था।

और इसलिए, यहाँ कोई मेरी ईमानदारी की गवाही दे रहा है। तो, उसने मेरी बात सुनी। उसके बाद कुछ ऐसे मौके आए जब मुझे ऐसा लगा कि ईश्वर चाहता है कि आप लोरेना से बात करें।

मुझे नहीं पता था कि वह कहां रहती थी क्योंकि कभी-कभी वह सड़क पर रहती थी। वह घर-घर रहती थी। मैं बाहर घूमने जाता और बस चलना शुरू कर देता, और पवित्र आत्मा मुझे उसके पास ले जाता।

अब, मेरे लिए, यह असामान्य है। मेरा मुख्य आध्यात्मिक उपहार शिक्षण है, है ना? अब मैं यही करने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन परमेश्वर की आत्मा विभिन्न तरीकों से हमारी अगुवाई कर सकती है।

इसलिए, मेरा उद्देश्य अन्य तरीकों से हमारा नेतृत्व करने वाले ईश्वर की आत्मा को कमतर आंकना नहीं है। इस संदर्भ में मेरा कहना सिर्फ इतना है कि पॉल विशेष रूप से आत्मा के नेतृत्व के नैतिक आयाम पर जोर दे रहा है और कैसे भगवान हमें सही काम करने के लिए सशक्त बनाता है। लेकिन निःसंदेह, जो सही और देखने में अच्छा लगता है उसे करने का अर्थ है उसकी आज्ञा का पालन करना, और जो कुछ भी वह हमें करने के लिए प्रेरित करता है।

वह कहता है, आत्मा हमारी अगुवाई करता है, और यदि आत्मा हमारी अगुवाई करता है, तो हम परमेश्वर की सन्तान हैं। वह भाषा निर्गमन की प्रतिध्वनि कर सकती है। यह पुराने नियम के कुछ स्थानों की प्रतिध्वनि है जहाँ परमेश्वर के लोगों को उसकी संतान कहा जाता था।

परन्तु निर्गमन 4:22, इस्राएल मेरा पुत्र, अर्थात् मेरा पहलौठा है। व्यवस्थाविवरण उन्हें अपनी संतान भी कहता है। हमारे अंदर यह विचार विशेष रूप से तब विकसित हुआ जब हम यीशु के बारे में सोचते हैं।

अब, यीशु परमेश्वर का पुत्र है। यह एक मसीहा शीर्षक है। निःसंदेह, जॉन में यह उससे भी अधिक हो जाता है।

लेकिन प्रारंभ में, यह एक मसीहा शीर्षक है। दूसरा शमूएल 7:14 और भजन 2:7. दूसरे शमूएल 7:14 में, यह संपूर्ण दाऊद वंश पर लागू होता है। ईश्वर ने एक प्रकार से उन्हें अपने पुत्र के रूप में अपनाया है।

खैर, अगर उसने इज़राइल को अपनाया है, तो वह निश्चित रूप से डेविड की लाइन को अपना सकता है। और भजन 2:7 में, इसे भजन 2:7 में और अधिक ऊंचा किया जा सकता है, लेकिन निश्चित रूप से, इस अवधि तक, इसे मसीहा, अभिषिक्त व्यक्ति, सर्वोत्कृष्टता पर लागू करने के लिए समझा गया था। यह ईश्वर का पुत्र है, सर्वोत्कृष्ट।

आप इसे 4Q, फ्लोरेलेगियम, मृत सागर स्क्रॉल और अन्य जगहों पर पाते हैं, कि डेविड का यह परम पुत्र ईश्वर का पुत्र होगा। लेकिन गॉस्पेल में, कुछ ऐसा जिसने मुझे प्रभावित किया, मैं पृष्ठभूमि में था, लेकिन कुछ ऐसा जिसने मुझे उपयोग के संदर्भ में प्रभावित किया वह यह था कि यीशु अपने पिता के साथ घनिष्ठता के संदर्भ में कितनी बार इसके बारे में बात करते हैं। हमें यह एहसास होता है कि यीशु अपने पिता के कितने करीब हैं, वह अपने पिता से कितना प्यार करते हैं और उनके पिता उनसे कितना प्यार करते हैं।

और मुझे लगता है कि हम यहां भी यही देखते हैं। अब, आज हर कोई जिससे हम बात करते हैं, हर कोई उस समय भी नहीं था, लेकिन आज भी हर कोई जिससे हम बात करते हैं वह एक आदर्श घराने से नहीं आता है। लेकिन यहूदी संस्कृति में, यहूदिया और गलील में जहां यीशु बोल रहे थे, आम तौर पर जब लोग पिता के बारे में सोचते थे, तो वे किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात

करते थे जिस पर वे निर्भर हो सकते थे, उन्हें यथासंभव सर्वोत्तम प्रदान करता था, कोई ऐसा व्यक्ति जो उनसे प्यार करता था, उन्हें अनुशासित करता था, लेकिन उनकी भलाई के लिए।

और हम ईश्वर को उसी तरह अनुभव करते हैं। यदि वह हमारे सांसारिक पिता के साथ कोई रिश्ता नहीं होता तो शायद हम ऐसा नहीं कर पाते, फिर भी जब ईश्वर को पिता के रूप में कहा जाता है तो इसका यही अर्थ होता है। निःसंदेह, हम आध्यात्मिक रूप से उसी से पैदा हुए हैं।

पॉल अन्यत्र ऐसा कहते हैं। अन्य नए नियम के लेखक ऐसा कहते हैं। लेकिन परमेश्वर के साथ घनिष्ठता, सम्मानजनक अंतरंगता का यह विचार, श्लोक 15 में, वह कहता है कि हमें फिर से डरने के लिए गुलामी की भावना नहीं मिली है।

इसके बदले हमें गोद लेने की भावना प्राप्त हुई है। खैर, गुलामी की भावना शायद पलायन के विचार को प्रतिध्वनित करती है। और डर पर वापस जाएं तो इसके अलग-अलग मतलब हो सकते हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि यह उस बारे में बात कर सकता है जिसके बारे में वह पहले बात करता रहा है। एक बार हम पाप के गुलाम थे, एक बार यह हम पर हावी था। 7.15 से 22 तक आपके पास जो कुछ है उसे वहां डर नहीं कहा जाता है, बल्कि यह व्यक्ति जो खुद को नियंत्रित करने में असमर्थ है और उन्हें पाप आदि के लिए बंदी बना लिया जाता है।

मुझे लगता है कि यह उस तरह के जीवन का वर्णन कर सकता है। परन्तु इस्राएली दासत्व में थे। वे वस्तुतः शारीरिक बंधन में थे।

और हम पाप के बंधन में थे। और हम पाप के भय के दासत्व में थे। दार्शनिक अक्सर मृत्यु के भय के बारे में भी बात करते थे, जिसके बारे में इब्रानियों का कहना है कि हम मसीह में से छुटकारा पा चुके हैं।

पॉल कहते हैं कि हमारे पास वह नहीं है। इसके बजाय हमारे पास गोद लेने की भावना है, पुत्रत्व की भावना है। अब हमारा भगवान के साथ एक अलग तरह का रिश्ता है, गुलामों का नहीं, बल्कि बच्चों का।

गलातियों के अध्याय 4 में पॉल ने अधिक विस्तार से बताया है, लेकिन इस संदर्भ में यह विचार यहाँ स्पष्ट है। वह भगवान के बच्चे होने की बात कर रहे हैं। हुइया थेसिया शब्द का प्रयोग अध्याय 9 में इसराइल को ईश्वर द्वारा अपने बच्चों के रूप में गोद लिए जाने के लिए किया गया है।

लेकिन पॉल ने इसे रोमियों 8 में दो बार हम सभी के संदर्भ में लागू किया है जो यीशु में विश्वास करते हैं। हमें भगवान के बच्चों के रूप में अपनाया गया है। हम ईश्वर से घनिष्ठता प्राप्त कर सकते हैं।

जिस किसी को हम जानते हैं उसकी अंतरंगता भरोसेमंद होती है। यहां तक कि जब हम यह नहीं समझते कि क्या हो रहा है, तब भी हम जानते हैं कि ईश्वर भरोसेमंद है। और परीक्षण के दौरान

इसका पता लगाने की कोशिश करने के बजाय परीक्षण से पहले इसे अपने दिमाग में रखना वास्तव में अच्छा है।

मेरे ईसाई जीवन के पहले भाग की सबसे कठिन परीक्षा, जब तक मुझ पर उस दवा की प्रतिक्रिया नहीं हुई, सबसे कठिन बात यह थी कि इस पहली दवा ने मुझे लगभग मार डाला था, यह बहुत तीव्र था। और दो साल तक मैं ऐसी स्थिति में था जहां ऐसा लग रहा था कि मेरा मंत्रालय नष्ट हो गया, मेरा जीवन नष्ट हो गया। सब कुछ मेरे नियंत्रण से बाहर हो गया था।

मेरे द्वारा कुछ नहीं किया जा सकता। परन्तु मैं पहले से जानता था कि परमेश्वर उन लोगों के लिए सब कुछ भलाई के लिए करता है जो उससे प्रेम करते हैं। तो, यह सिर्फ एक घिसी-पिटी बात नहीं थी।

कोई मुझ पर हमला कर रहा था और मुझे लगा, मैं अभी यह सुनना नहीं चाहता। यह कुछ ऐसा था जिसे मैं अपने दिल में जानता था। और उन दो वर्षों के लिए, यह ऐसा था, भगवान, मैं इसे नहीं देख सकता, यह संभवतः अच्छे के लिए कैसे काम कर सकता है।

लेकिन मुझे तुम पर भरोसा है। कभी-कभी मैं भजन की भाषा में कहता था, हे भगवान, कितनी देर, कितनी देर। लेकिन मैं जानता था कि ईश्वर उन लोगों के लिए सभी चीजें भलाई के लिए करेगा जो उससे प्यार करते हैं।

मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता था कि इसके माध्यम से मैं उससे प्यार करता रहूँ। और उन्होंने मेरे जीवन के सबसे कमजोर समय में मेरी मदद की। 8:15 अब्बा फादर को चिल्लाने के बारे में आगे बात करता है।

चिल्लाने की यह भाषा, क्रेडज़ो, वास्तव में इसका मतलब ज़ोर से चिल्लाने जैसा कुछ है। यह बहुत सशक्त भाषा है। और हम क्या चिल्लाते हैं? हम चिल्लाते हैं अब्बा हापटर.

अब्बा एक अरामी अभिव्यक्ति है। पॉल रोम में लोगों से अरामी भाषा में क्यों बात कर रहा होगा? वह यह क्यों मानेगा कि वे अरामी भाषा जानते होंगे? यह वह धारणा नहीं है जो हमें रोम के अधिकांश कब्र शिलालेखों और अन्य यहूदी शिलालेखों से मिलती है। हो सकता है कि कुछ लोग थोड़ा-बहुत अरामी भाषा जानते हों, लेकिन यह बहुत आम बात नहीं थी।

इसलिए, जब पॉल अब्बा कहता है, तो वह एक अनुवाद देता है, लेकिन वह यह भी समझता है कि कुछ चीजें हैं जिनके बारे में वे जानते हैं, कुछ चीजें जो प्रारंभिक ईसाइयों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित की गई हैं। वह इसे गलातियों में फिर से करता है, सिवाय इसके कि वहां वह पहले से ही सीधे उनकी सेवा कर चुका है ताकि वे इसे उससे सुन सकें। गलातियों 4.6. वह कौन सा स्रोत होगा जिसने इसे इतना महत्वपूर्ण बना दिया होगा कि यह अरामी वाक्यांश प्रारंभिक चर्च, ग्रीक भाषी चर्च में व्यापक है? मरकुस 14.36, जब यीशु गेथसेमनी में परमेश्वर के समक्ष अपनी पीड़ा को प्रकट कर रहा है, वह कहता है, अब्बा, पिता।



इसलिए, यीशु परमेश्वर के साथ हमारे घनिष्ठ संबंध का आदर्श बन जाता है। हमारे पास पुत्रत्व की भावना है क्योंकि हम पुत्र में हैं, हम यीशु में हैं। यीशु का इससे क्या अभिप्राय था? यीशु की प्रार्थना बहुत विशिष्ट थी।

जोआचिम जेरेमियास ने इस बारे में बहुत कुछ लिखा, और फिर गीज़ा वर्म्स, जो एक बहुत अच्छे यहूदी विद्वान हैं, ने उस बिंदु पर प्रतिवाद किया। उन्होंने कहा, ठीक है, ऐसे अन्य लोग भी थे जो अब्बा को भगवान के रूप में इस्तेमाल करते थे। लेकिन अन्य लोगों द्वारा इसका उपयोग करने के उदाहरण इससे बहुत बाद के हैं, और वे एक विशेष को घेरते हैं, जिसे वर्म्स करिश्माई रब्बी कहते थे, एक विशेष रब्बी जो एक विशेष प्रकार की प्रार्थना के लिए जाना जाता था।

और यह विशेष रब्बी भी प्रार्थना में भगवान को अब्बा कहकर संबोधित नहीं करता है। वह एक दृष्टान्त में ईश्वर को अब्बा की तरह बोलता है। इसलिए, विशिष्ट होने के लिए आपको पूरी तरह अद्वितीय होने की आवश्यकता नहीं है।

लेकिन इस मामले में, भगवान को अब्बा कहकर संबोधित करने में यीशु बहुत ही विशिष्ट थे। यह अंतरंगता का एक शीर्षक सुझाता है। यह अपमानजनक नहीं है, और ऐसा केवल छोटे बच्चों ने ही नहीं किया, बल्कि मेरे पापा ने भी ऐसा किया।

यह बहुत, बहुत, बहुत, बहुत था, इसने आत्मीयता के साथ-साथ सम्मान का भी संचार किया। और इसी प्रकार का रिश्ता आत्मा हमें हमारे स्वर्गीय पिता के साथ देता है। मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिनका अपने सांसारिक पिता के साथ उस तरह का रिश्ता नहीं था, लेकिन अपने स्वर्गीय पिता के साथ अपने रिश्ते के माध्यम से, उन्हें पता चला कि पितृत्व कैसा होना चाहिए, और वे कुछ मामलों में अपने सांसारिक पिता के साथ मेल-मिलाप करने में सक्षम थे। ये मामले ईश्वर के साथ उनके अनुभव के माध्यम से।

अध्याय 8, पद 16. आत्मा गवाही देता है। इसका क्या मतलब है कि आत्मा गवाही देता है? याद रखें, प्रारंभिक यहूदी धर्म में, आत्मा विशेष रूप से भविष्यवाणी के साथ जुड़ा हुआ था, अक्सर पुराने नियम में भी, लेकिन प्रारंभिक यहूदी विचार में और भी अधिक प्रमुखता से।

तो, यह पहली चीज़ों में से एक हो सकती है जिसके बारे में लोग सोचेंगे। एसेन-प्रकार के हलकों में, जैसे मृत सागर स्कॉल और जुबलीज़ की पुस्तक में, आत्मा भी शुद्धि के साथ जुड़ा हुआ है, जैसे कि यहजेकेल 36 में है। लेकिन वहां भी आत्मा कभी-कभी भविष्यवाणी सशक्तिकरण के साथ जुड़ा हुआ है।

अन्य साहित्य में, 4 एज़्रा, निश्चित रूप से रब्बी, और प्रारंभिक यहूदी हलकों में व्यापक रूप से, आत्मा भविष्यवाणी की भावना से जुड़ा हुआ है। जोसेफस भी. तो, आत्मा गवाही देता है।

यह उसी आत्मा की तरह है जिसने भविष्यवक्ताओं को प्रेरित किया और हमसे बात करके हमें याद दिलाया कि हम ईश्वर की संतान हैं। जब मैं कहता हूँ कि वह हमसे बोलता है, तो हममें से अलग-अलग लोग उसे अलग-अलग तरीकों से सुन सकते हैं। जब मैं पवित्रशास्त्र का अध्ययन

कर रहा होता हूँ तो निश्चित रूप से मुझे आत्मा मुझसे बात करते हुए अनुभव करती है, खासकर जब मैं भगवान की आवाज सुनने के लिए भक्तिपूर्वक इसका अध्ययन कर रहा होता हूँ।

यह मेरे लिए कभी भी शुष्क नहीं होता क्योंकि पवित्रशास्त्र के मेरे अध्ययन में आत्मा जीवित है, और मैं उससे ऐसा करने के लिए कहता हूँ। लेकिन साथ ही, आत्मा हमसे विभिन्न तरीकों से बात कर सकता है। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने आत्मा का अनुभव इस तरह से किया है कि, मेरा मतलब है, मैंने कभी कोई दर्शन नहीं किया है।

मैंने कभी कोई श्रव्य आवाज नहीं सुनी। लेकिन, आप जानते हैं, हम आत्मा को विभिन्न तरीकों से सुनते हैं। लेकिन आत्मा गवाही देता है इसलिए आत्मा किसी तरह से हमसे बात करता है।

और यह कहता है कि आत्मा हमारी आत्मा के साथ मिलकर गवाही देता है, इसलिए न केवल आत्मा हमारी आत्मा की गवाही देता है, बल्कि आत्मा हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की संतान हैं। यह जेकेल 36, इससे पहले कि वह कहे, मैं अपनी आत्मा उन में डालूंगा, वह कहता है, मैं उन्हें एक नया हृदय और एक नई आत्मा दूंगा। जॉन अध्याय 3 भी उस पर चलता है।

जो कुछ भी आत्मा से पैदा हुआ है वह आत्मा है। वह हमें अंदर से नया बनाता है, और उसकी आत्मा हमारी आत्मा के साथ मिलकर गवाही देती है। मोरावियन आंतरिक साक्ष्य पर बहुत अधिक जोर देते हैं।

यदि आप ईश्वर के हैं, तो आप जानते हैं कि आप ईश्वर के हैं। और वेस्ली ने भी यही कहा। इसका मतलब यह नहीं है कि किसी व्यक्ति के मन में इसके बारे में कभी कोई सवाल नहीं होता।

कभी-कभी वेस्ली को ऐसा महसूस होता था कि उसका दिल अजीब तरह से गर्म हो जाता है। लोग कभी-कभी विभिन्न प्रश्नों से जूझते हैं। लेकिन मसीह को अपना जीवन देने और मसीह को अपना जीवन न देने के बीच अंतर है।

अध्याय 8 और श्लोक 17 में, वह कहता है, ठीक है, हम परमेश्वर की संतान हैं, और यदि हम संतान हैं, तो हम उत्तराधिकारी भी हैं। और इसका मतलब यह है कि जैसे हमें यीशु, परमेश्वर के पुत्र के माध्यम से अपनाया गया है, हम यीशु के साथ सह-वारिस हैं, वे कहते हैं। उत्तराधिकारियों से उसका क्या तात्पर्य है? उसका क्या मतलब है कि हम विरासत में मिलेंगे? यहूदी ग्रंथों में अक्सर आने वाली दुनिया को विरासत में पाने की बात कही गई है।

फिर, यह निर्गमन भाषा है, जहां भगवान ने अपने लोगों को मिस्र से बचाया और उन्होंने उन्हें वादा किए गए देश में विरासत और कब्जा देने का वादा किया। इफिसियों ने वास्तव में इफिसियों 1 में उन दोनों शब्दों का उपयोग हमारी भविष्य की विरासत या हमारे भविष्य के कब्जे के लिए किया है। पॉल विरासत की इस भाषा का बहुत बार उपयोग करता है।

उसने इसे अध्याय 4 में उपयोग किया। वह इसे 1 कुरिन्थियों में उपयोग करता है, दुष्टों को परमेश्वर का राज्य विरासत में नहीं मिलेगा। गलातियों में वह इसका इसी प्रकार उपयोग करता

है। और आत्मा विशेष रूप से हमें अन्यत्र भी इस विरासत, इस भविष्य के कब्जे की याद दिलाने से जुड़ी है।

क्योंकि 2 कुरिन्थियों 1:22 और 2 कुरिन्थियों 5:5 में, आत्मा हमारा आर्बोन है, अग्रिम भुगतान। भगवान ने हमारे लिए जो कुछ रखा है उसकी पहली किस्त के लिए इसका उपयोग पपीरी में किया जाता है। मैं कुछ चीजें दोहराता हूँ, न केवल उस स्थिति में जब कुछ लोग उन्हें भूल गए हों, बल्कि मैं कुछ चीजें उस स्थिति में भी दोहराता हूँ जब कुछ लोग वीडियो का एक भाग देख रहे हों और दूसरा नहीं।

लेकिन इफिसियों 1:13-14 में भी, आत्मा हमारी भविष्य की विरासत का अग्रिम भुगतान है। तो, जो आत्मा हमें गवाही देती है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं, वही आत्मा हमें परमेश्वर के वादे के प्रति आश्चस्त करती है कि जो बातें आंख ने नहीं देखीं, और कान ने नहीं सुनीं, परन्तु हम आत्मा के द्वारा जानते हैं। आपके पास सर्वनाशकारी साहित्य है।

आपके पास भविष्यवाणी साहित्य और रहस्योद्घाटन की पुस्तक में भी है जहां कभी-कभी इसे लगभग काव्यात्मक भाषा का उपयोग करना पड़ता है। आने वाली दुनिया की महिमा को संप्रेषित करने के लिए इसे बहुत सारी छवियों और रूपकों का उपयोग करना होगा। और रहस्योद्घाटन कई बिंदुओं पर ईजेकील से आगे निकल जाता है क्योंकि यह अभी विस्तार कर रहा है।

ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे हम इसे शब्दों में वर्णित कर सकें, लेकिन इन विचारोत्तेजक छवियों का उपयोग करके यह शब्दों में उतना ही करीब आता है जितना संभव हो सकता है। लेकिन वास्तव में हमें इसका पहले से ही स्वाद मिल जाता है क्योंकि हम अपने लिए परमेश्वर के प्रेम का अनुभव करते हैं। हमारी वह घनिष्ठता सदैव बनी रहेगी।

कभी-कभी मैंने इसे पूजा में इतनी गहराई से अनुभव किया है कि मैंने वास्तव में कहा है, भगवान, हे भगवान, मैं इसका अनुभव करना बंद नहीं करना चाहता। कृपया मुझे अभी अपने साथ रहने के लिए घर ले चलें। घर जाने और प्रभु के साथ रहने की चाहत का मैं नियमित रूप से अनुभव नहीं करता, लेकिन मैं रुकना भी नहीं चाहता।

किसी दिन हमें रुकना नहीं पड़ेगा. यह उतना ही सुंदर होगा. कष्ट बनाम गौरव.

कभी-कभी हम केवल अच्छी चीजों के बारे में बात करना चाहते हैं, लेकिन पीड़ाएँ ईसाई जीवन का हिस्सा हैं। श्लोक 17 और 18। हम मसीह के साथ मर गए, और हमारे पास एक नया जीवन है।

ठीक है, हम मसीह के साथ कष्ट सहते हैं, पद 17 कहता है ताकि हम उसके साथ महिमा पाएँ। वह विरासत है, जो हमें विरासत में मिलेगी। हम उसके साथ महिमा पाएँगे।

महिमा से क्या तात्पर्य है? आपको याद होगा कि कभी-कभी पुराने नियम में, तम्बू या मंदिर पर भगवान की महिमा की बात की जाती है। जब सुलैमान का मंदिर समर्पित किया गया था, मेरा मानना है कि यह 1 राजा अध्याय 8 में था, प्रभु की आत्मा, प्रभु की महिमा, काबोड, जिसका अर्थ

भारीपन भी है, यहूदी लोग भी शकीना के संदर्भ में, ईश्वर की उपस्थिति के बारे में बात करते थे। या याकारा. प्रभु की महिमा लोगों पर, याजकों पर इतनी भारी पड़ गई कि वे प्रभु के सामने सेवा करने के लिए खड़े नहीं हो सके।

तुम्हें याद है कि कैसे मूसा प्रभु की सारी महिमा का सामना नहीं कर सका। यहाँ तक कि मूसा भी परमेश्वर की सारी महिमा नहीं देख सका। फ़िलिपियंस कहते हैं, किसी दिन हमारे पास उसके स्वयं के महिमामय शरीर की तरह महिमा के शरीर होंगे, और हम भगवान की उपस्थिति में खड़े होने में सक्षम होंगे।

इसीलिए मुझे लगता है कि नया यरूशलेम एक घन के आकार का है, पुराने नियम के परमपवित्र स्थान की तरह। ईश्वर की उपस्थिति की पूर्णता, बिना किसी व्यवधान के, हमेशा-हमेशा के लिए। इसका मतलब यह नहीं है कि अन्य चीजें नहीं चल रही हैं।

भविष्य की अन्य छवियां भी हैं, लेकिन बिना किसी सीमा के उसकी उपस्थिति में होना, यह संभव सबसे अद्भुत चीज़ है। परन्तु हम मसीह के साथ दुख उठाते हैं, ताकि हम उसके साथ महिमा पा सकें। और पॉल इस बारे में अध्याय में बाद में और अधिक बात करेगा।

हमें मसीह के प्रेम से क्या अलग कर सकता है? चाहे अकाल हो या संकट या नंगापन या तलवार, शहादत, यहां तक कि इन सभी चीजों में, हम मसीह के माध्यम से भारी विजय प्राप्त करते हैं जिसने हमसे प्यार किया। तुलना हमेशा बराबर वालों के बीच नहीं होती. मैंने पहले इसका उल्लेख किया था, और यह यहाँ 8:18 में सच है। उनका कहना है कि वर्तमान पीड़ा उस महिमा के साथ तुलना करने योग्य नहीं है जो हमारा इंतजार कर रही है।

वह 2 कुरिन्थियों 4 में भी ऐसा ही कुछ कहता है, जहां वर्तमान कष्ट महिमा का बहुत अधिक भार वहन करेंगे। और हिब्रू में महिमा और भारीपन के विचार पर खेल हो सकता है। वह श्लोक 22 में हमारे वर्तमान कष्टों को एक नई दुनिया की प्रसव पीड़ा के रूप में बोलते हैं।

इसलिए हमारे कष्टों में भी, यह एक तरह से एक पूर्वानुभव है। यह नई दुनिया को लाने में मदद कर रहा है, खासकर जब हम पीड़ित हैं ताकि लोग सुसमाचार सुन सकें, जैसे कि कुलुस्सियों 1 में, जहां पॉल कहते हैं, मैं मसीह के शरीर के लिए, जो कि चर्च है, उसके कष्टों में जो कमी है, उसे पूरा करता हूं। . ऐसा नहीं है कि वह दुनिया के लिए प्रायश्चित्त कर रहा है।

मसीह ने पहले ही ऐसा कर दिया था। लेकिन हम उसके कष्टों में भागीदार हैं क्योंकि हम अच्छी खबर, अच्छी खबर का संदेश साझा करते हैं, जो अंत के आने से जुड़ा है। जब सब जातियों में सुसमाचार का प्रचार किया जाएगा, तब अन्त आ जाएगा।

प्रकाशितवाक्य 6, वेदी के नीचे की आत्माएँ जहाँ पुराने नियम में बलिदानों का खून डाला गया था। पॉल कहते हैं, मुझे क्षमा करें, प्रकाशितवाक्य 6 में प्रकाशितवाक्य कहता है कि वेदी के नीचे ये आत्माएं, ये लोग जो शहीद हो गए हैं, चिल्लाते हैं, हे भगवान, पवित्र और सच्चे कब तक आप हमारे बहाए गए खून का बदला नहीं लेंगे पृथ्वी पर? और जवाब आता है, आपको अपने साथियों

की पूरी संख्या आने तक इंतजार करना होगा। अच्छा, पूरी संख्या क्या है? जब तक उन लोगों को सुसमाचार फैलाने के लिए अपनी जान नहीं देनी पड़ी।

जब सभी लोगों के बीच खुशखबरी फैल जाएगी, तभी अंत आ जाएगा। वर्तमान कष्टों को हम आने वाले संसार की प्रसव पीड़ा के रूप में अनुभव करते हैं। यहूदी लोगों का मानना था, कई यहूदी लोगों का मानना था कि प्रसव पीड़ा की एक अंतिम अवधि होने वाली थी, एक नई दुनिया के आने से पहले एक अंतिम क्लेश।

आप इसे बहुत सारे यहूदी स्रोतों में पाते हैं। कुछ लोगों ने कहा है कि यह केवल रब्बियों में है, जैसे मिशनाह सोता 915 में, मेरा मानना है। लेकिन वास्तव में, यह काफी सामान्य है।

यह संपूर्ण यहूदी साहित्य में व्यापक है, यह अंत समय का क्लेश है। और इसका यह विचार कि इसे प्रसव पीड़ा, तीव्र पीड़ा के रूप में दर्शाया गया है, आपके पास यह न केवल चौथे एज्रा जैसे कुछ अन्य यहूदी साहित्य में है, बल्कि मेरे विचार से, कुमरान भजनों के तीसरे भजन आदि में भी है। लेकिन पॉल इसे यीशु के पहले और दूसरे आगमन के बीच की पूरी अवधि पर लागू कर रहा है।

उसे नहीं पता था कि दूसरी बार आने में इतना समय लगेगा। लेकिन हम वर्तमान में प्रसव पीड़ा का अनुभव कर रहे हैं क्योंकि हम दुनिया के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। और वह हमें श्लोक 28 में दिखाता है कि कष्ट भी हमारी भलाई के लिए काम करते हैं।

अंततः, वे हमारी भलाई के लिए काम करते हैं क्योंकि हम श्लोक 29 में मसीह की छवि के अनुरूप हैं। कराहना, श्लोक 22 और 23 और 26। हम यहां उसे कई तरीकों से कराहने के बारे में बात कर रहे हैं।

सृष्टि प्रसव वेदना से कराह उठती है। हमने बस उस पर गौर किया। यह कहता है, हम भी अपने शरीर के परिवर्तन की प्रतीक्षा में कराहते हैं।

और आत्मा कराहते हुए हमारे लिये बिनती करता है। अतः वर्तमान सृष्टि कराह रही है, त्राहि-त्राहि कर रही है। लेकिन एक नया आदेश आ रहा है जब भगवान चीजों को बदलने जा रहे हैं।

और हम इसके लिए अब उन लोगों के रूप में काम कर सकते हैं जो भविष्य की पूर्वसंभावना में जी रहे हैं। हम अब इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिए काम कर सकते हैं। यदि हम वास्तव में राज्य के लोग हैं तो हमें ऐसा करने की आवश्यकता है।

लेकिन आखिरकार, भगवान का वादा है। जहां भगवान एक ऐसी दुनिया बनाने जा रहे हैं जहां न्याय, धार्मिकता और शांति रहेगी। इसके अलावा, हम अपने शरीर के परिवर्तन के लिए भी कराहते हैं।

पॉल 2 कुरिन्थियों 5, 2, और 4 में उसी भाषा का उपयोग करता है, जहाँ, यह मानते हुए कि वह उसी चीज़ का उल्लेख कर रहा है जिसे वही भाषा 1 कुरिन्थियों 15 में संदर्भित करती है, पॉल इस

बारे में बात कर रहा है कि हम कराह रहे हैं, इसलिए नहीं कि हम निर्वस्त्र होना चाहते हैं इस वर्तमान शरीर के साथ, लेकिन क्योंकि हम इसे पहनना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि इस नश्वर तम्बू को एक अमर शरीर, एक पुनरुत्थान शरीर से प्रतिस्थापित किया जाए। वह कहते हैं कि हम शरीर के परिवर्तन के लिए कराहते रहेंगे।

हम नए शरीरों की प्रतीक्षा करते हुए कराहते हैं, श्लोक 23। लेकिन श्लोक 26 में, आत्मा हमारे लिए अवर्णनीय कराहों के साथ मध्यस्थता करती है, जिससे पता चलता है कि यह सिर्फ हम नहीं हैं, यह सिर्फ सृष्टि नहीं है, बल्कि भगवान स्वयं हमारे साथ कराह रहे हैं कि आत्मा स्वयं उत्सुक है। यीशु स्वयं वापस आकर हम सभी का उत्थान करने की आशा कर रहे हैं।

इसमें इतना समय क्यों लग रहा है? 2 पतरस सुझाव देता है कि हम परमेश्वर के दिन के आने की आशा कर सकते हैं और उसमें तेजी ला सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हर कोई बचाया जाए। और फिर, इस संदर्भ के अनुरूप हमने यीशु को यह सिखाते हुए देखा है कि सभी राष्ट्रों के बीच अच्छी खबर का प्रचार किया जाना चाहिए, तभी अंत आएगा।

हम रोमियों 11 में इसे फिर से देखने जा रहे हैं जब अन्यजातियों की परिपूर्णता आ गई है। यदि हम वास्तव में कराह रहे हैं और हम वास्तव में प्रभु के आगमन के लिए उत्सुक हैं, तो आइए राज्य का संदेश फैलाएं। आइए दुनिया को तैयार करने में मदद करें।

लेकिन साथ ही, कुछ विद्वानों ने कहा है कि यहां कराहना जहां आत्मा हमारे लिए, हमारे भीतर, हमारे भीतर मध्यस्थता करते हुए कराहती है, अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के अनुभव को संदर्भित करती है। और विद्वान वास्तव में इस पर विभाजित हैं। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि यह अन्य भाषाओं को संदर्भित करता है।

अब, मैं निश्चित रूप से अन्य भाषाओं के खिलाफ नहीं हूँ। मैं वास्तव में स्वयं अन्य भाषाओं में प्रार्थना करता हूँ। लेकिन, यदि आपको यह पसंद नहीं है, तो यह मेरे रूपांतरण के दो दिन बाद ही मेरे साथ हुआ।

मुझे नहीं पता था कि भाषाएँ क्या होती हैं, लेकिन मैं तब से ऐसा कर रहा हूँ। मैं इसका आनंद लेता हूँ, खासकर तब जब मेरी बुद्धि अनुसंधान में व्यस्त रहती है। यह वास्तव में अच्छा है।

पौलुस कहता है कि तुम्हारी आत्मा प्रार्थना करती है और तुम्हारी समझ निष्फल है। यह अच्छा है कि आत्मा मेरे उस हिस्से को भी नवीनीकृत कर रही है। लेकिन मैं व्यक्तिगत रूप से नहीं सोचता कि यह अन्य भाषाओं की बात कर रहा है क्योंकि उनका कहना है कि ये अस्पष्ट कराहें हैं।

खैर, जीभ ग्लो एसएसए है, जो पॉल के लिए या ल्यूक के लिए किसी ऐसी चीज के लिए इस्तेमाल करने के लिए वास्तव में अजीब शब्द लगता है जो अस्पष्ट है, शब्दहीन है। इस बात पर बहस चल रही है कि शब्द कैसे काम करते हैं या शब्दांश कैसे काम करते हैं या प्रासंगिकता सिद्धांत के संदर्भ में शायद यह सिर्फ भावनात्मक रूप से किसी बात को संप्रेषित करने के लिए है। मैं उन सभी बहसों में नहीं पड़ूँगा क्योंकि मेरी राय में वे यहाँ वास्तव में प्रासंगिक नहीं हैं।

लेकिन मुझे लगता है क्योंकि यह कहता है कि यह अस्पष्ट है, यह कुछ और है। लेकिन मुझे लगता है कि यह इस अर्थ में उसी क्रम का है कि आत्मा हमारे अंदर काम कर रही है और आत्मा हमें प्रार्थना में मदद कर रही है और आत्मा हमारे लिए उससे भी अधिक हस्तक्षेप कर रही है जितना हम जानते हैं कि अपने लिए कैसे हस्तक्षेप करना है। यहां की भाषा आह भरने की भी भाषा है।

यह पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद, निर्गमन 2:23 और 24 पर आधारित है। और यह उस नए निर्गमन के विचार में फिट बैठता है जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूं। और अगले सत्र में, हम न्यू एक्सोडस के बारे में बात करेंगे और हम रोमियों अध्याय 8 के बाकी हिस्सों के बारे में बात करेंगे।

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 8:5-26 पर सत्र संख्या 9 है।